बाबर का सबसे बड़ा पुत्र हुमायूँ भारत में मुग़ल साम्राज्य का दूसरा शासक था। 1530 से 1556 तक उनका शासनकाल चुनौतियों की एक श्रृंखला से चिह्नित था, जिसमें आंतरिक संघर्ष, बाहरी खतरे और निर्वासन की अवधि शामिल थी। हुमायूँ और उसके शासन के बारे में मुख्य बातें इस प्रकार हैं:

1. प्रारंभिक जीवन**:** हुमायूँ का जन्म 1508 में काबुल में सम्राट बाबर और उनकी पत्नी माहम बेगम के यहाँ हुआ था। उन्होंने राजसी शिक्षा प्राप्त की और छोटी उम्र से ही नेतृत्व के लिए तैयार हो गए।

2. सिंहासन पर प्रवेश**:** 1530 में बाबर की मृत्यु के बाद, हुमायूं 22 साल की उम्र में मुगल सिंहासन पर बैठा। उसे एक साम्राज्य विरासत में मिला जो अभी भी भारत में अपनी शक्ति को मजबूत करने की प्रक्रिया में था।

3. संघर्ष और निर्वासन**:** सम्राट के रूप में हुमायूँ के प्रारंभिक वर्ष आंतरिक विद्रोहों से चिह्नित थे, विशेष रूप से उसके भाइयों कामरान, अस्करी और हिंडाल की ओर से। इन संघर्षों ने साम्राज्य पर उसकी पकड़ कमजोर कर दी और उसे निर्वासन के लिए मजबूर होना पड़ा।

4. सत्ता में वापसी**:** हुमायूँ ने फारस (आधुनिक ईरान) में शरण लेने के लिए कई वर्ष निर्वासन में बिताए। सफ़ाविद शासक शाह तहमास प्रथम की मदद से, उन्होंने एक सेना इकट्ठी की और 1555 में भारत लौट आए।

5.पानीपत की लड़ाई **(1556):** अपनी वापसी पर, हुमायूँ को अफगान शासक शेर शाह सूरी के रूप में अपनी सबसे महत्वपूर्ण चुनौती का सामना करना पड़ा, जिसने उत्तरी भारत पर कब्ज़ा कर लिया था। 1556 में पानीपत की लड़ाई में, हुमायूँ की सेना को हार का सामना करना पड़ा, और वह गंभीर रूप से घायल हो गया, कुछ दिनों बाद उसकी मृत्यु हो गई।

6. मुगल साम्राज्य में योगदान**:** चुनौतियों और संक्षिप्त शासनकाल के बावजूद, हुमायूँ की विरासत भारत में मुगल साम्राज्य के विस्तार और सुदृढ़ीकरण की नींव रखने में निहित है। उन्होंने अपने बेटे अकबर के प्रयासों को जारी रखने के लिए मंच तैयार किया।

7. कला और विद्या के संरक्षक**:** हुमायूँ कला, संस्कृति और साहित्य में अपनी रुचि के लिए जाने जाते थे। उन्होंने मुग़ल संस्कृति के उत्कर्ष में योगदान देते हुए कलाकारों, विद्वानों और कवियों को संरक्षण दिया।

8. वास्तुकला**:** हालाँकि उनका शासनकाल अपेक्षाकृत छोटा था, हुमायूँ का युग भारत में मुगल स्थापत्य परंपराओं की शुरुआत का गवाह बना। दिल्ली में हुमायूँ के मकबरे का निर्माण, जो यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल है, मुगल वास्तुकला के सबसे प्रतिष्ठित उदाहरणों में से एक है।

9. हुमायूँ का नाम**:** उनका मूल नाम नासिर-उद-दीन मुहम्मद हुमायूँ था, लेकिन उन्हें आमतौर पर केवल हुमायूँ के रूप में जाना जाता है।

10. उत्तराधिकार**:** हुमायूँ का उत्तराधिकारी उसका पुत्र अकबर था, जो आगे चलकर सबसे महान मुग़ल सम्राटों में से एक बना।

जबकि हुमायूँ का शासनकाल चुनौतियों और अस्थायी असफलताओं से चिह्नित था, मुगल संस्कृति, कला और वास्तुकला में उनके योगदान के साथ-साथ मुगल साम्राज्य के प्रारंभिक इतिहास में उनकी भूमिका ने उन्हें भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति बना दिया।